राजस्थान

भूगोल

ब्रह्मास्त्र

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए रामबाण पुस्तक

Apni Padhai Publication

आपणी पढ़ाई

INDEX

- राजस्थान – सामान्य परिचय .... 1 - 5
- राजस्थान – भौतिक विभाजन .... 6 - 13
- राजस्थान की जलवायु .... 14 - 18
- राजस्थान में मिट्टियाँ .... 19 - 22
- राजस्थान का अपवाह तंत्र .... 23 - 29
- राजस्थान के प्रमुख बाँध .... 30 - 31
- राजस्थान की झीलें .... 32 - 36
- सिंचाई परियोजनाएँ .... 37 - 41
- राजस्थान की नहरें .... 42 - 45
- राजस्थान में वन सम्पदा .... 46 - 53
- राजस्थान में अभयारण्य .... 54 - 60
- राजस्थान में खनिज .... 61 - 69
- राजस्थान के उद्योग .... 70 - 76
- राजस्थान में कृषि .... 77 - 85
- राजस्थान की जनगणना .... 86 - 89
- राजस्थान में परिवहन .... 90 - 95
- राजस्थान में पर्यटन .... 96 - 98
- राजस्थान में पशुपालन .... 99 - 103
- राजस्थान में ऊर्जा संसाधन .... 104 - 108
- राजस्थान में सूखा – अकाल .... 109 - 110

राजस्थान का मानचित्र

1 राजस्थान - सामान्य परिचय

- ऋग्वेद में राजस्थान को ब्रहमवर्त व रामायण में वाल्मीकि ने 'मरूकांतार' कहा

- सबसे प्राचीन लिखित उल्लेख बंसतगढ शिलालेख (सिरोही) में मिलता है जिसमें राजस्थान के लिए 'राजस्थानीयादित्य' शब्द मिलता है
- जार्ज थॉमस पहला व्यक्ति था जिसने इस भू–भाग के लिए 'राजपूताना' शब्द का प्रयोग किया, इसका उल्लेख पुस्तक 'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जार्ज थॉमस' (1805 में विलियम फ्रेन्कलिन द्वारा प्रकाशित) में मिलता है

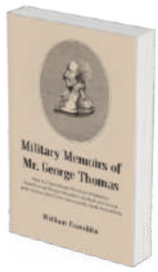

- अग्रेंजो ने इस भू भाग का नाम राजपूताना रखा था
- राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'द एनाल्स एंड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान' में किया

❖ राजस्थान की स्थिति –

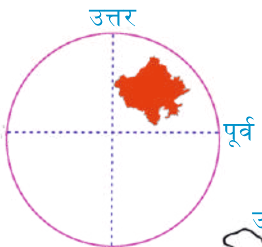

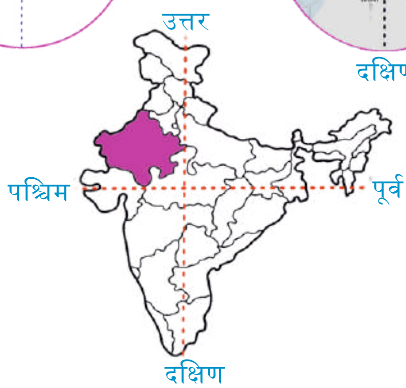

- विश्व/ग्लोब में राजस्थान उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) में, एशिया महाद्वीप में दक्षिण–पश्चिम (नैऋत्य कोण) व भारत में उत्तर–पश्चिम (वायव्य कोण) में स्थित है

- अंक्षाशीय दृष्टि से – उत्तरी गोलार्द्व में है
- देशातंरीय दृष्टि से – पूर्वी गोलार्द्व में है

❖ अक्षांश व देशान्तर –

- पूर्व से पश्चिम के मध्य ग्लोब पर काल्पनिक रेखाएँ अंक्षाश व उत्तर से दक्षिण के मध्य ग्लोब पर रेखाएँ देशांतर कहलाती है

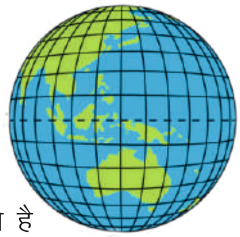

- अंक्षाश से दूरी की गणना व देशातंर से समय की गणना होती है
- ग्लोब पर कुल अंक्षाश रेखाओ की सख्यां – 179
- ग्लोब पर कुल अंक्षाशो की सख्यां – 181
- ग्लोब पर कुल देशातंर – 360
- दो अंक्षाश के मध्य दूरी – 111.13 किमी
- दो देशान्तर के मध्य दूरी – 111.32 किमी

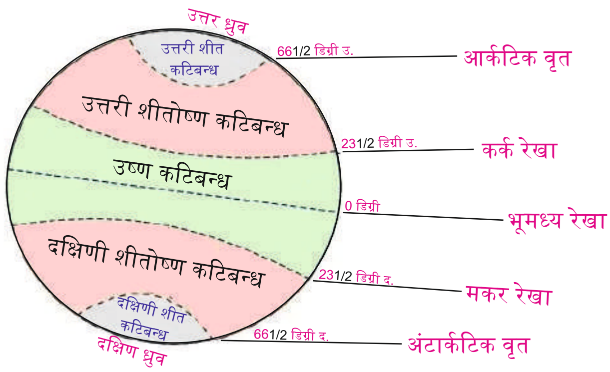

- 0° अंक्षाश रेखा को भूमध्य (विषुवत) रेखा कहते है
- 0° देशान्तर रेखा को ग्रीनविच रेखा / प्रधान मध्यान रेखा कहते है
- 1° देशातंर को पार करने में 4 मिनट का समय लगता है
- भारत की मानक समय रेखा 82°30′ पूर्वी देशान्तर रेखा को माना गया है जो इलाहबाद के निकट नैनी स्थान से गुजरती है

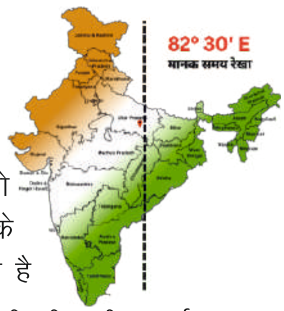

- भारतीय मानक समय (IST) ग्रीनवीच मीन टाईम (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है व देशातंर रेखा के पश्चिम में जाने पर समय में कमी होगी

2 राजस्थान - भौतिक विभाजन

- प्राग ऐतिहासिक काल (पाषाण काल) में सम्पूर्ण विश्व एक पिण्ड के रूप में था जिसे पेंजिया कहते थे, इसके चारो और सागर पेंथालासा सागर था

- पेंजिया के दो भाग बने

(1) अंगारा लैण्ड (उत्तरी भाग)

(2) गौडवाणा लैण्ड (दक्षिणी भाग)

- इनके मध्य टेथिस सागर था

- राजस्थान में गौंडवाना लैण्ड व टेथिस सागर के अवशेष पाये जाते है

- राजस्थान को सबसे पहले भौतिक प्रदेशो में वी.सी. मिश्रा ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का भूगोल' में राजस्थान को 7 भागो में बाँटा –

(1) पश्चिमी शुष्क प्रदेश (2) अर्द्वशुष्क प्रदेश (3) नहरी प्रदेश (4) अरावली प्रदेश (5) पूर्वी कृषि औधोगिक प्रदेश (6) दक्षिण–पूर्वी कृषि प्रदेश (7) चम्बल बीहड प्रदेश

- हरिमोहन सक्सेना ने अपनी पुस्तक राजस्थान का भूगोल में राजस्थान को चार प्रदेशो में बाँटा

(1) पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश (2) अरावली पर्वतीय प्रदेश (3) पूर्वी मैदानी प्रदेश (4) दक्षिणी–पूर्वी पठारी प्रदेश

	मरूस्थलीय प्रदेश	अरावली पर्वतीय प्रदेश	पूर्वी मैदानी प्रदेश	दक्षिण -पूर्वी पठारी प्रदेश
बनने का क्रम/समय	चौथा प्राचीन	सबसे प्राचीन	तीसरा प्राचीन	दूसरा प्राचीन
युग	प्लीस्टोसीन उत्तर	प्री-क्रेम्ब्रियन	प्लीस्टोसीन प्रारम्भिक	क्रिटेशियस
क्षेत्रफल	61.11 %	9 %	23 %	6.89 %
जनसख्या	40 %	10 %	39 %	11 %
भारत के भौतिक प्रदेश का हिस्सा	उत्तर भारत का विशाल मैदान	प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश	उत्तर भारत का विशाल मैदान	प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश
अवशेष	टेथिस सागर	गौडवाना लैण्ड	टेथिस सागर	गौडवाना लैण्ड
वर्षा	0-40 cm	40-60 cm	60-80 cm	80-120

❖ (1) पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश –

- 7000 वर्ष पूर्व (प्लीस्टोसीन हिमयुग) राजस्थान में वनो की उपस्थिति थी लेकिन अब थार का मरूस्थल है
- थार मरूस्थल का सर्वाधिक विस्तार भारत में है यह भारत के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात में फैला हुवा है

- सम्पूर्ण थार मरूस्थल का 62% अकेले राजस्थान में है

- राजस्थान में मरूस्थलीय जिले – 16 (गंगानगर, हनुमानगढ, बीकानेर, चूरू, झुंझुनूं, सीकर, जैसलमेर, जोधपुर, फलौदी, बाडमेर, बालोतरा, ब्यावर, पाली, नागौर, डीडवाना–कुचामन, जालौर)

3 राजस्थान की जलवायु

❖ मानसून –

- अरबी भाषा के मौसिम शब्द से बना है जिसका अर्थ है – पवनो की दिशा
- मानसून मौसमी पवनों (जिनकी दिशा मौसम बदलने के साथ बदल जाये) का उदाहरण है
- मानसून का अध्ययन करने वाला प्रथम विद्वान – अलमसूदी था

- **वायुमण्डल** – पृथ्वी के चारो ओर गैसों का आवरण
- **वायुदाब** – वायुमण्डल पर लगने वाला दाब / भार
- **निम्न वायुदाब** –

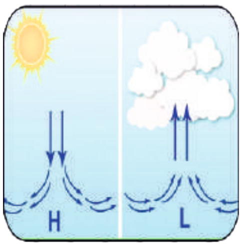

- जहाँ तापमान अधिक होगा वहाँ वायु गर्म होकर ऊपर उठेगी, और निम्न वायुदाब बनेगा
- ग्रीष्म ऋतु में राजस्थान के उतर–पश्चिम क्षेत्र में कम वायुदाब रहता है

- **उच्च वायुदाब** –
- कम तापमान वाले क्षेत्र जहाँ वायु ठण्डी होती है
- हवाएँ हमेशा उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती है

- **मौसम** – वायुमण्डल में अल्पकालिन परिवर्तन
- **ऋतु** – कुछ माह का वायुमण्डलीय परिवर्तन
- **जलवायु** – 30 वर्ष से अधिक समयावधि की वायुमण्डलीय दशा ही जलवायु होती है

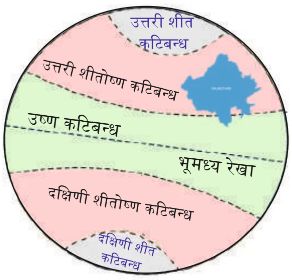

- राजस्थान का अंधिकाश भाग उपोष्ण कटिबंध में आता है, कर्क रेखा के कारण डूँगरपुर, बाँसवाडा उष्ण कटिबंध में है
- राजस्थान के तापमान में अतिशयता व विविधता पायी जाती है

❖ राजस्थान जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक –

(1) अंक्षाशीय स्थिति –

- राज. का अधिकांश भाग उपोष्ण कटिबंध में आता है (कर्क रेखा राजस्थान के दक्षिणी भाग से गुजरती है)

(2) अरावली पर्वत की स्थिति –

- अरब सागर से आने वाली मानसूनी पवने अरावली के समान्तर होने के कारण मानसूनी पवने बिना वर्षा किये उत्तरी भाग में आगे बढ जाती है जबकी बंगाल की खाडी शाखा अरावली से टकराकर राजस्थान के दक्षिण–पूर्वी भाग में सर्वाधिक वर्षा करती है तथा अरावली का पश्चिमी भाग वृष्टिछाया प्रदेश कहलाता है अर्थात थार के मरूस्थल में कम वर्षा करती है

(3) समुद्र तल से दूरी –

- राजस्थान से अरब सागर की दूरी – 400 किमी
- राजस्थान से कच्छ की खाडी की दूरी – 225 किमी
- राजस्थान से खम्भात की खाडी – 275 किमी
- राजस्थान से बंगाल की खाडी – 2900 किमी

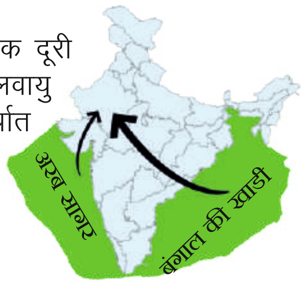

- राज. की समुन्द्रतट से अधिक दूरी होने के कारण यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है अर्थात राजस्थान की जलवायु पर समुंद्र की समकारी जलवायु का प्रभाव नहीं पडता है

(4) मरूस्थल व पवनों की दिशा –

- राजस्थान के पश्चिमी भाग में थार का मरूस्थल है जो गर्मियो में अधिक गर्म व सर्दियो में अधिक ठण्डा रहता है

(5) समुद्र तल से ऊँचाई –

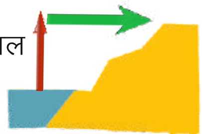

- राजस्थान का अंधिकाश भाग समुन्द्रतल से 370 मीटर से भी कम ऊँचा है
- धरातल से 165 मीटर की ऊँचाई पर जाने पर 1 सेन्टीग्रेड तापमान में कमी व 32 मीटर नीचे जाने पर 1 सेन्टीग्रेड तापमान बढता है

4 राजस्थान में मिट्टियाँ

- मृदा शब्द लैटिन भाषा के 'सोलम' शब्द से बना है जिसका अर्थ है – फर्श
- मिट्टियो का अध्ययन – मृदा विज्ञान (Pedology) कहलाता है

❖ मृदा का वर्गीकरण –

(1) वैज्ञानिक वर्गीकरण (2) भौगोलिक वर्गीकरण
(3) कृषि विभाग का वर्गीकरण

❖ (1) वैज्ञानिक / नवीन वर्गीकरण –

- अमेरिका के वैज्ञानिको के आधार पर राजस्थान की मिट्टियो को 5 भागो में बाँटा गया है

(1) एन्टीसोल्स –

- राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित सभी जिलो में पायी जाती है

- सर्वाधिक क्षेत्र मे विस्तृत है
- इसके दो उप मृदाकण है –
  (1) सोमेन्ट्स (2) फलूवेंट्स

(2) एरिडीसोल्स –

- अर्द्वशुष्क जलवायु प्रदेश में पायी जाती है
- जिले – जोधपुर, पाली, जालौर, नागौर, डीडवाना कुचामन, चूरू, सीकर, झुंझुनूं
- इसका मृदा उपकण ऑरथिड है जिसके अन्तर्गत कैम्बो ऑरथिडस, कैल्सी ऑरथिडस, सेलो ऑरथिडस राजस्थान में पाये जाते है

(3) इन्सेप्टीसोल्स –

- उप आर्द्व जलवायु में पायी जाती है
- जिले – सिरोही, पाली, राजसमंद, उदयपुर, भीलवाडा, सलूम्बर, चितौडगढ
- मृदा उपकण – उस्टोक्रेप्टस

(4) अल्फीसोल्स (जलोढ मिट्टी) –

- आर्द्व जलवायु प्रदेशो में मिलती है
- जिले – अलवर, खैरथल–तिजारा, जयपुर, दौसा, डीग, कोटपूतली–बहरोड, भरतपुर, करौली, टोंक सवाईमाधोपुर, धौलपुर
- मृदा उपकण – हेप्लूस्तालफस

(5) वर्टीसोल्स (काली मिट्टी) –

- राज. के दक्षिण–पूर्वी भाग (हाडौती पठार में) मिलती है
- आर्द्व व अति आर्द्व जलवायु प्रदेश में मिलती है
- जिले – कोटा, बूँदी, बांरा, झालावाड, डूँगरपुर, बांसवाडा
- मृदा उपकण – पेल्यूस्टर्टस व क्रोमस्टर्टस

❖ (2) भौगोलिक वर्गीकरण –

(1) रेतीली बलुई मिट्टी (मरूस्थलीय मृदा) –

- राजस्थान के पश्चिमी भाग में पायी जाती है
- राज्य मे सबसे अधिक भू–भाग पर पायी जाने वाली मिट्टी (लगभग दो–तिहाई भाग पर)

- थार मरूस्थल में ग्रेनाइट और बलुआ पत्थर से बलुई मिट्टी का निर्माण हुवा है
- कैल्सियम–फास्फेट की अधिकता व नाइट्रोजन की कमी होती है
- मोटे कण वाली मिट्टी जो पहले नदियो द्वारा लाई गई थी अब अनउपजाऊ है व इसमें लवणता अधिक है
- यह मृदा पवनों द्वारा विस्थापित होती रहती है
- मिट्टी के कण मोटे होते है इसलिए जलधारण (नमी) की क्षमता कम होती है
- जिले – जैसलमेर, बाडमेर, बालोतरा, बीकानेर, जोधपुर, फलौदी, नागौर, चूरू, सीकर, झुंझुनूं

5 राजस्थान का अपवाह तंत्र

- राज. की अपवाह प्रणाली को 3 भागो में बाँटा गया है

(1) अरब सागर का अपवाह तंत्र (17%) –
लूणी, प. बनास, साबरमती, माही

(2) बंगाल की खाडी का अपवाह तंत्र (23%) –
चम्बल, बनास, बाणगंगा, गम्भीर

(3) आंतरिक जल प्रवाह तंत्र (60%) –
घग्घर, कांतली, काकनी, साबी, रूपारेल, मेंढा, लिक नदी

(1) अरब सागर का अपवाह तंत्र –

- वे नदियाँ जो अपना जल अरब सागर में ले जाती है
- अरब सागर में कच्छ का रण व खम्भात की खाडी है

❖ लूणी नदी –

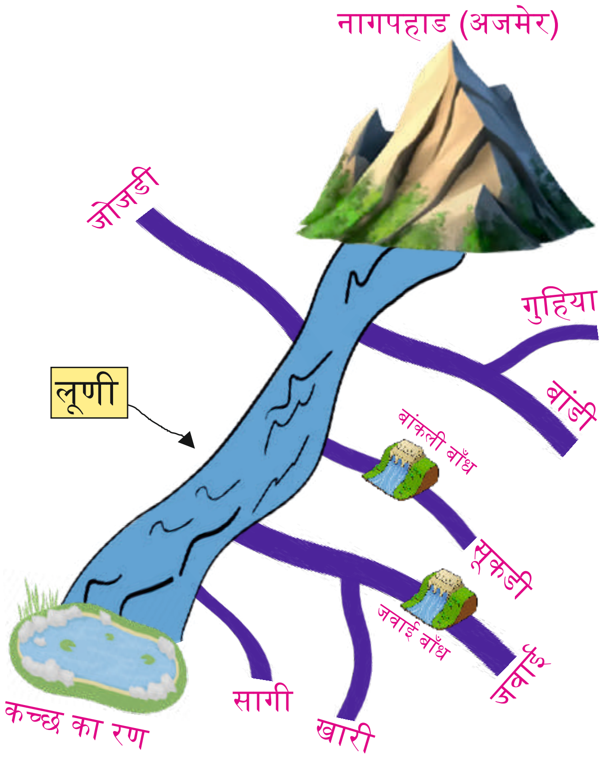

- **उपनाम** – सागरमति / लवणवती (प्राचीन नाम)
  – साक्री (पुष्कर में)
  – अन्तः सलिला (कालीदास ने कहा)
  – आधी मिठी आधी खारी नदी
  – मारवाड की गंगा

- उद्‌गम – नागपहाड (अजमेर)
- उद्‌गम स्थल से सागरमती कहलाती है, गोविन्दगढ (अजमेर) में सरस्वती धारा से मिलने के बाद इसका नाम लूनी हो जाता है
- यह नदी अजमेर → नागौर → ब्यावर → पाली → जोधपुर → बालोतरा → बाडमेर → जालौर में बहती हुवी कच्छ के रण (अरब सागर) में जाकर गिरती है

- लूनी की कुल लम्बाई – 495 किमी
- राजस्थान में लम्बाई – 330 किमी
- पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख नदी है

- लूनी नदी का प्रवाह क्षेत्र 'गौडवाड प्रदेश' कहलाता है,
- इस बेसिन के पूर्व में पाली में स्थित पहाडियाँ काला भूरा डूंगर है
- राजस्थान के सम्पूर्ण अपवाह क्षेत्र का लगभग 10.4% भाग लूनी नदी बेसिन का है

- बालोतरा कस्बा लूनी नदी के पेटे से नीचे बसा है इसलिए अरावली की पुष्कर पहाडियो में अधिक वर्षा होने पर बालोतरा में बाढ की संभावना होती है
- लूणी का जल बालोतरा के बाद खारा हो जाता है

- सांचौर (जालौर) में इसे रेल / नाडा कहते है
- पाली, बालोतरा में रंगाई–छपाई उधोगो के कारण लूनी नदी का जल प्रदूषित हो रहा है

❖ लूणी की सहायक नदियाँ –

- लीलडी, जवाई, जोजडी, सगाई/सागी, सूकडी, मिठडी, बांडी, गुहिया नदी

● जोजडी नदी –
- उद्‌गम – पोडंलू गाँव (नागौर)
- लूणी की एकमात्र सहायक नदी जो दायी ओर से मिलती है व अरावली की पहाडियो से नहीं निकलती है

6 राजस्थान के प्रमुख बाँध

❖ चम्बल नदी पर निर्मित बाँध –

- चम्बल नदी के उद्गम से यमुना में मिलने तक बाँधो का क्रम –

गाँधी सागर बाँध → राणा प्रताप सागर बाँध → जवाहर सागर बाँध → कोटा बैराज

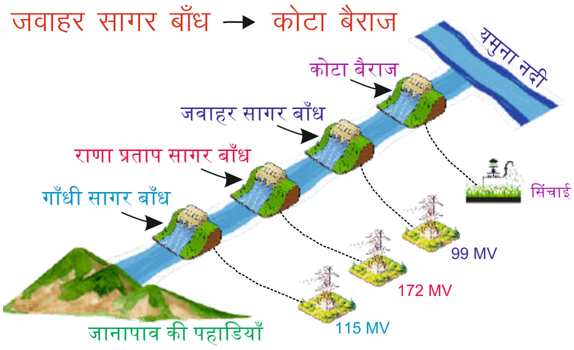

- चम्बल परियोजना तीन चरणों में पूरी हुई
- प्रथम चरण में गाँधी सागर बाँध, द्वितीय चरण में राणा प्रताप सागर बाँध और तीसरे चरण में जवाहर सागर बाँध बनाया गया

(1) गाँधी सागर बाँध – मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

- चम्बल नदी पर निर्मित प्रथम व सबसे बडा बाँध
- ऊँचाई – 62.17 मीटर (204 फीट)
- विद्युत उत्पादन – 115 मेगावाट

(2) राणा प्रताप सागर बाँध – रावतभाटा (चितौडगढ)

- चूलिया जलप्रपात के नीचे की ओर बना है
- भराव क्षमता की दृष्टि से राज. का सबसे बडा बाँध
- इस बाँध के किनारे देश का दूसरा व राज. का प्रथम परमाणु विद्युत गृह 'राजस्थान एटोमिक पॉवर स्टेशन' कनाडा के सहयोग से 1973 में बनाया गया
- विद्युत उत्पादन – 172 मेगावाट

(3) जवाहर सागर बाँध – बोरावास (कोटा)

- विद्युत उत्पादन – 99 मेगावाट

(4) कोटा सिंचाई / कोटा बैराज – कोटा

- चम्बल नदी का एकमात्र बाँध जिससे सिंचाई होती है
- इस बाँध का उद्घाटन पं. नेहरू ने किया था
- इस बाँध से सिंचाई हेतु दो नहरें (दायीं व बायीं नहर) निकाली गयी है
- इस बाँध से चम्बल नदी सर्वाधिक प्रदूषित हुई है
- चम्बल नदी पर सर्वाधिक 10 लिफ्ट नहरे है जिनमे 8 लिफ्ट नहरे कोटा बैराज के दायीं नहर पर बनी है

● प्रमुख लिफ्ट नहरे –

- जालीपुरा लिफ्ट स्कीम – कोटा
- दीगोद लिफ्ट स्कीम – कोटा
- अंता लिफ्ट स्कीम – बारां
- पीपलदा लिफ्ट स्कीम – सवाईमाधोपुर

❖ बीसलपुर बाँध – देवली (टोंक)

- निर्माण – बनास नदी पर 1987–1999 के मध्य
- यह बाँध बनास, डाई, खारी नदियों के संगम पर है
- राज. का एकमात्र कंक्रीट से बना बाँध
- राजस्थान की सबसे बडी पेजयल परियोजना है

- बीसलपुर परियोजना से जयपुर, ब्यावर, अजमेर व टोंक में जलापूर्ति होती है
- बीसलपुर बाँध में पानी की आवक बढाने के लिए ब्राह्मणी – बनास परियोजना की घोषणा की गई जिसमें चितौडगढ से बहकर चंबल में जाने वाली ब्राह्मणी नदी को बनास से जोडेंगे

7 राजस्थान की झीलें

- झीलें दो प्रकार की होती है
(1) खारे पानी की झीलें
(2) मीठे पानी की झीलें

❖ (1) खारे पानी की झीलें –

- राज. में सर्वाधिक खारे पानी की झीलें है
- खारे पानी की झीलें टेथिस सागर का अवशेष है
- सर्वाधिक खारे पानी की झीलें डीडवाना – कुचामन जिले में है

❖ सांभर झील – फूलेरा (जयपुर)

- राजस्थान की सबसे बडी व भारत की दूसरी सबसे बडी खारे पानी की झील है
- राजस्थान के तीन जिलो – जयपुर, डीडवाना–कुचामन, अजमेर में फैली है
- लम्बाई – 32 किमी, चौडाई – 3 – 15 किमी

- सांभर झील 27–29° उत्तरी अंक्षाश व 74–75° पूर्वी देशान्तरों के मध्य है
- सांभर झील में 4 नदियाँ अपना जल लाती है

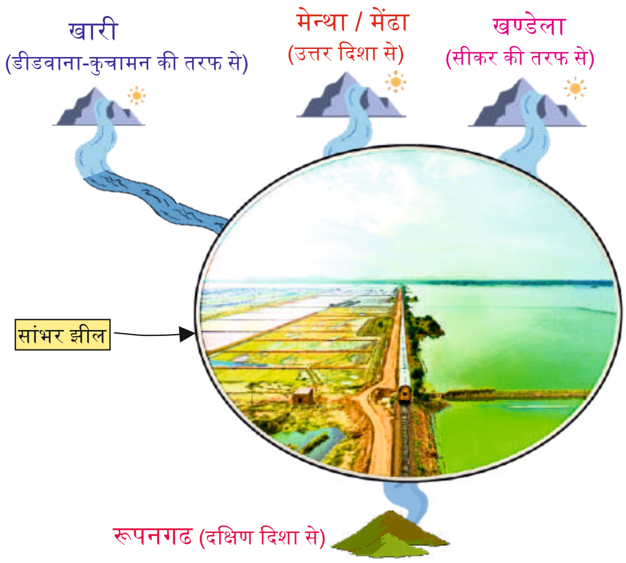

- सर्वाधिक नमक मेन्था नदी बहाकर लाती है
- सांभर में क्यार पद्वति द्वारा नमक तैयार किया जाता है

- सांभर झील देश की सर्वाधिक नमक उत्पादन झील है यह देश के कुल नमक उत्पादन का 8.7% नमक उत्पादित करती है

● सांभर साल्ट लिमिटेड – 1964

- सांभर में नमक उत्पादन का कार्य करती है
- हिन्दूस्तान साल्ट लिमिटेड की सहायक कम्पनी है
- केन्द्र की 60% व राज्य की 40% हिस्सेदारी

- गुजरात का राज्य पक्षी राजहंस व कुरंजा पक्षी (खींचन गाँव) सांभर झील में आते है
- 2019 में सांभर झील में एवियन बोटुलिज्म नामक बिमारी से हजारो पक्षियो की मौत हो गई थी
- 1990 में सांभर झील को रामसर साइट में शामिल किया गया था

> नोट – भारत की सबसे बडी खारे पानी की झील – चिलका (उडीसा) है

● रामसर स्थल –

- रामसर शहर (ईरान) में 2 फरवरी 1971 को आर्द्र भूमियों (Wet Lands – वह स्थल जो जल में डूबा रहें) को संरक्षित करने के लिए विश्व सम्मेलन का आयोजन हुवा था जो 1975 को अस्तित्व मे आया
- भारत 1 फरवरी 1982 में इसका हिस्सा बना

- राजस्थान के 2 स्थान रामसर साइट मे शामिल है
(1) केवलादेव घना पक्षी विहार – 1981 को
(2) सांभर झील – 1990 को

8 सिंचाई परियोजनाएँ

- राजस्थान में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल वाला जिला – गंगानगर व न्यूनतम जिला – राजसमंद है
- सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत वाला जिला – गंगानगर व न्यूनतम जिला – चूरू है
- राज. मे सर्वाधिक सिंचाई पूर्वी भाग में होती है

- राज. में 15 नदी बेसिन चिन्हित किये गये है इन नदी बेसिनो मे कुल उपलब्ध सतही जल की मात्रा लगभग 158.60 लाख एकड फीट (15.86 M.A.F) है जो देश में कुल उपलब्ध जल संसाधन का 1.16 % हिस्सा ही है

- राज. में सर्वाधिक सिंचाई कुएँ व नलकूपों से होती है
- कुएँ व नलकूपों से सर्वाधिक सिंचाई–जयपुर, जोधपुर
- नहरो से सर्वाधिक सिंचाई – गंगानगर
- तालाबों से सर्वाधिक सिंचाई – भीलवाडा, उदयपुर

- कुओं से (Open Wells) – 20.10 %
- नलकूपों से (Tube WElls) – 49.29 %
- नहरों से (Canals) – 28.39 %
- तालाबों से (Tanks) – 0.33 %

- सिंचाई परियोजनाएँ मुख्यत: 4 प्रकार की होती है

(1) बहुउद्देशीय परियोजनाएँ –

- जिसका जल बहुत सारे उद्देश्यों (पेयजल, सिंचाई, विद्युत उत्पादन) के लिए काम आये
- पं. जवाहर लाल नेहरू ने बहुउद्देशीय परियोजनाओं को 'आधुनिक भारत का नवीन मंदिर' कहा

(2) वृहद् सिंचाई परियोजना –

- जिनका कृषि कमाण्ड क्षेत्र 10 हजार हैक्टेयर से ज्यादा हो

(3) मध्यम सिंचाई परियोजना –

- कृषि कमाण्ड क्षेत्र 2 – 10 हजार हैक्टेयर के बीच हो

(4) लघु सिंचाई परियोजना –

- जिनका कृषि कमाण्ड क्षेत्र 2 हजार हैक्टेयर से कम हो

❖ भाखडा नांगल परियोजना –

- भारत की सबसे बडी बहुउद्देशीय परियोजना
- राजस्थान + पंजाब + हरियाणा की संयुक्त परियोजना

- सतलज नदी पर दो बाँध बनाये गये – (1) भाखडा बाँध (2) नांगल बाँध

(1) भाखडा बाँध –

- बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश) में सतलज नदी पर है

- नींव – 1955 मे पं. नेहरू ने रखी
- भारत का दूसरा ऊँचा बाँध है

> नोट – भारत का सबसे ऊँचा बाँध भागीरथी नदी पर टिहरी बाँध (260 मी – उत्तराखण्ड) है

- भाखडा बाँध के पिछे गोविन्द सागर झील है

- भाखडा बाँध को पं. जवाहर लाल नेहरू ने "चमत्कारी विराट वस्तु" कहा

(2) नांगल बाँध –

- रोपड (पंजाब) में सतलज नदी पर
- नांगल बाँध से दो नहरें निकाली है

9 राजस्थान की नहरें

❖ इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना –

- **उपनाम –**

- राजस्थान की मरूगंगा
- राजस्थान की जीवन रेखा
- रेगिस्तान की स्वर्ण रेखा
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा

◆ **उद्‌गम** – हरिके बैराज बाँध (फिरोजपुर, पंजाब) से (सतलज–व्यास नदियो के सगंम पर स्थित)

- राज. में प्रवेश – खारा खेडा (टिब्बी – हनुमानगढ)

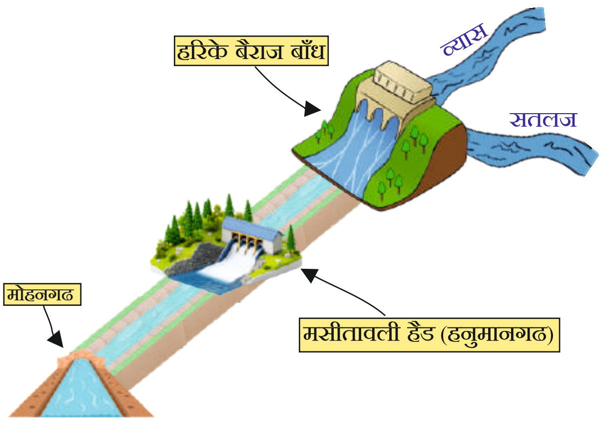

- मुख्य उद्देश्य – रावी – व्यास नदियो के पानी से राजस्थान को आंवटित 8.6 M.A.F पानी में से 7.59 M.A.F पानी का उपयोग मरूस्थलीय क्षेत्र में पेयजल व सिंचाई सुविधा हेतु उपलब्ध कराना

- यह भारत की सबसे बडी मानव निर्मित नहर परियोजना है जिसकी परिकल्पना बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने की थी व महाराजा सार्दुल सिंह ने इसके लिए पहला कदम उठाया था
- इंजी. कंवरसेन (नहर का जन्मदाता व योजनाकार) से नहर की रूपरेखा तैयार करवा '' बीकानेर में पानी की आवश्यकता '' रिपोर्ट 1948 में भारत सरकार को भेजी

- प्रारम्भ में नाम – राजस्थान नहर
- शिलान्यास – 31 मार्च 1958 को गोविन्द वल्लभ पंत (केन्द्र में गृहमंत्री) द्वारा

- इंदिरा गाँधी के निधन के बाद 2 नवम्बर 1984 को राजस्थान नहर का नाम बदलकर इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना कर दिया

- इस परियोजना का निर्माण दो चरणों में पूरा हुआ है

(1) **प्रथम चरण**– मसीतावाली से सत्तासर गाँव (बीकानेर) तक 189 किमी मुख्य नहर का निर्माण किया गया
- गंगानगर, हनुमानगढ, बीकानेर जिले शामिल किये गये

(2) **दूसरा चरण** – सत्तासर (बीकानेर) से मोहनगढ (जैसलमेर) तक 256 किमी मुख्य नहर का निर्माण किया गया

- इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना (IGNP) की मुख्य नहर राज. के 5 जिलो – हनुमानगढ, गंगानगर, बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर से होकर गुजरती है

- इंदिरा गाँधी नहर की कुल लम्बाई – 649 किमी

- हरिके बैराज से मसीतावली हैड तक (फीडर नहर) लम्बाई – 204 किमी
- मसीतावली से मोहनगढ (मुख्य नहर) – 445 किमी

- मुख्य नहर – मसीतावली (हनुमानगढ) से मोहनगढ (जैसलमेर) तक है

14 राजस्थान में कृषि

- भारत में कृषि गणना का कार्य हर 5 वर्ष में कृषि व सहकारिता विभाग करता है
- स्वतंत्रता के समय भारत की लगभग 75% जनसख्याँ अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर थी
- राजस्थान की लगभग 62% आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है

- कृषि को मानसून का जुआ कहते है
- राजस्थान में कृषि विकास में मुख्य बाधा वर्षा की अनियमितता, असामनता है
- राजस्थान की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है

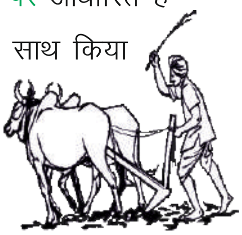

- जब कृषि व पशुपालन का कार्य साथ किया जाये उसे मिश्रित कृषि कहते है
- राजस्थान में कृषि व पशुपालन पर 75% जनसख्याँ निर्भर है
- 2024–25 में खाद्यान्न का उत्पादन 267.67 लाख मैट्रिक टन होने का अनुमान है, जो कि गत वर्ष की तुलना में 10.67% अधिक है
- राजस्थान राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में स्थिर (2011–12) कीमतों पर कृषि क्षेत्र का योगदान – 2023–24 में 26.21% व 2024–25 में 26.54%
- राजस्थान राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में प्रचलित कीमतों पर कृषि क्षेत्र का योगदान – 2023–24 में 26.72% व 2024–25 में 26.92%
- 2024–25 में फसल क्षेत्र का अंश 46.17% पशुधन क्षेत्र का अंश 46.77% वानिकी क्षेत्र का अंश 6.56% और मत्स्य क्षेत्र का अंश 0.51% है

- राजस्थान का अन्न भण्डार / खाद्य की टोकरी – गंगानगर
- फलों का उद्यान (टोकरी) – गंगानगर
- मसालों में राजस्थान का मध्यप्रदेश के बाद दूसरा स्थान है
- राज. में मसालों की दृष्टि से प्रथम स्थान – बारां

❖ कृषि पद्धतियाँ –

- **शुष्क कृषि (बारानी कृषि) –**
  - बरसाती पानी में होने वाली कृषि
  - 50 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
  - राज. के पश्चिमी भाग (मरूस्थलीय जिलों) में होती है
- **सिंचित कृषि** – कृषि को सिंचाई की आवश्यकता हो
- **आर्द्र कृषि** – राज. के दक्षिण पूर्वी भाग में की जाती है
  - 100 सेमी से अधिक वर्षा वाले इलाकों में की जाती है
- **झूमिंग (Shifting Farming) / स्थानान्तरित कृषि –**
  - आदिवासियों द्वारा (डूँगरपुर, बाँसवाडा, उदयपुर जिलो में) वनों को काटकर या जलाकर की जाने वाली कृषि स्थानान्तरित कृषि / स्लैश एण्ड बर्न कृषि कहते है
  - राजस्थान में इसे गरासिया – वालरा कृषि कहते है
  - भीलों द्वारा पहाडी जंगलो को जलाकर की जाने वाली कृषि चिमाता व मैदानी भागों में की जाने वाली कृशि दजिया कहलाती है
  - आसाम में इसे झूमिंग खेती, मध्यप्रदेश में कुमारी, आन्ध्रप्रदेश में पाई कहते है

❖ राजस्थान में 3 सीजन की फसल होती है –

(1) खरीफ फसल (स्यालू) –

- जून – जूलाई में बोयी जाती है
- सितम्बर – अक्टूबर में काटते है
- **मुख्य फसल** – चावल, बाजरा, मक्का, कपास, गन्ना, ज्वार, ग्वार, मूँगफली, सोयाबीन, अरण्डी, तिल, अरहर, उडद, मूंग, मोठ

15 राजस्थान की जनगणना

- जनगणना संघ सूची का विषय है व प्रत्येक 10 साल बाद जनगणना होती है
- भारत में सबसे पहले जनगणना – 1872 में लार्ड मेयो के काल में हुई
- प्रथम व्यवस्थित जनगणना 1881 में लार्ड रिपिन के समय शुरू हुई

- 2011 की जनगणना भारत की 15 वीं जनगणना थी
- स्वतंत्रता के पश्चात – 7 वीं जनगणना थी
- विश्व जनसंख्या दिवस – 11 जूलाई
- राजस्थान की कुल जनसंख्या – 6.86 करोड (6,85,48,437)
- भारत की जनसंख्या का – 5.67%
- जनसंख्या की दृष्टि से राज. का देश में स्थान – 7

2011 की जनगणना के समय स्थान 8 वाँ था लेकिन जून 2014 में आन्ध्रप्रदेश से तेलंगाना अलग हो गया

❖ जनसंख्या –

- **राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बडे जिले**
- जयपुर (66.26 लाख), जोधपुर (36.87 लाख), अलवर (36.74 लाख), नागौर, उदयपुर

- **जनसंख्या की दृष्टि से छोटे जिले –**
- जैसलमेर (6.70 लाख), प्रतापगढ (8.68 लाख), सिरोही (10.36 लाख), बूँदी
- 10 लाख (1 मिलियन) से कम जनसंख्या वाले जिले – 2

- **राजस्थान की सर्वाधिक आबादी वाले शहर –**
  जयपुर (30.77 लाख), जोधपुर (10.33 लाख), कोटा (10.01 लाख), बीकानेर, अजमेर
- राजस्थान के 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहर – 3
- 5 लाख से अधिक आबादी वाले शहर – 5
- 1 लाख से अधिक आबादी वाले शहर – 30

- राज. की जनसंख्या में हिन्दू आबादी प्रतिशत – 88.49
- मुस्लिम आबादी – 9.06%
- सिख आबादी – 1.27%
- जैन आबादी – 0.91%
- ईसाई आबादी – 0.14%
- बौद्व आबादी – 0.02%

- सर्वाधिक हिन्दू जनसंख्या – जयपुर, प्रतिशत – दौसा
- सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या – जयपुर, प्रतिशत – जैसलमेर
- सर्वाधिक ईसाई जनसंख्या – बाँसवाडा, प्रतिशत – बाँसवाडा

❖ ग्रामीण जनसंख्या –

- 2001 में राजस्थान में ग्रामीण जनसंख्या – 76.61% थी व 2011 में घटकर 75.10% हो गयी

- **सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले जिले –**
  जयपुर (31.54 लाख), अलवर, नागौर
- **सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले –**
  डूँगरपुर, बाडमेर, बाँसवाडा
- **न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या वाले जिले –**
  जैसलमेर, कोटा, प्रतापगढ
- **न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले –**
  कोटा, जयपुर, अजमेर

❖ शहरी (नगरीय) जनसंख्या –

- 2001 में राजस्थान में शहरी जनसंख्या 23.29% थी जो 2011 में बढकर 24.90% हो गयी

- **सर्वाधिक शहरी जनसंख्या वाले जिले –**
  जयपुर (34.71 लाख), जोधपुर, कोटा
- **सर्वाधिक शहरी जनसंख्या प्रतिशत वाले जिले –**
  कोटा (60.31%), जयपुर, अजमेर, जोधपुर

16 राजस्थान में परिवहन

- परिवहन मुख्यतः 4 प्रकार का होता है
(1) सडक परिवहन (2) रेल परिवहन
(3) वायु परिवहन (4) जल परिवहन

❖ सडक परिवहन –

- विश्व में सडक निर्माता – जॉन मकादम (स्कॉटलैण्ड)
- भारत में सडक निर्माता – शेरशाह सूरी
- शेरशाह सूरी ने ग्रांड ट्रंक रोड बनाई जो बांगलादेश के चटगाँव से लाहौर होते हुए काबुल तक जाती है

● राजस्थान में सडको की स्थिति –

राष्ट्रीय राजमार्ग (NH)	10,790 किमी
राज्य राजमार्ग (SH)	17,376 किमी
मुख्य जिला सडकें (MDR)	14,372 किमी
अन्य जिला सडकें	68,265 किमी
ग्रामीण सडकें	2,06,318 किमी
कुल योग	3,17,121 किमी

(स्रोत - आर्थिक समीक्षा 2024-25)

- मार्च 2024 तक राजस्थान में सडक घनत्व – 92.66 किमी / 100 वर्ग किमी
- राष्ट्रीय स्तर पर सडक घनत्व – 165.24 किमी

❖ राष्ट्रीय राजमार्ग –

- संचालन – केन्द्र सरकार द्वारा
- इनका निर्माण व रखरखाव का कार्य NHAI (भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) करता है
- NHAI की स्थापना – 1988
- NH के मील के पत्थरों का ऊपर से रंग – पीला

- SH के पत्थरों का रंग – हरा
- प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना में बनी पत्थरों का रंग – नारंगी
- जिला सडकों के पत्थरों का रंग – काला
- राज. में वर्तमान में राष्ट्रीय राजमार्ग की संख्या – 52
- भारत में राष्ट्रीय राजमार्ग की सर्वाधिक लम्बाई – महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, राजस्थान
- राजस्थान का तीसरा स्थान है
- भारत में राष्ट्रीय राजमार्ग की न्यूनतम लम्बाई – गोवा, सिक्किम

❖ राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्ग –

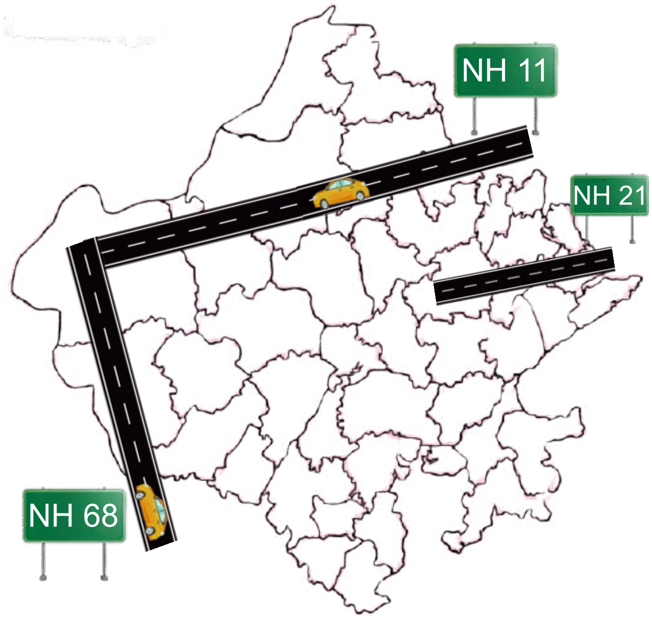

● NH 11 (पुरानी संख्या - 15) –

- म्याजलार (जैसलमेर) से रेवाडी (हरियाणा) तक
- राज. में – जैसलमेर, फलौदी, बीकानेर, चूरू, सीकर, झुंझुनूं

● NH 21 (पुरानी संख्या - 11) –

- जयपुर से आगरा, बरेली (उत्तरप्रदेश) तक
- राज. में – जयपुर, दौसा, भरतपुर

❖ रेल परिवहन –

- भारतीय रेलवे का राष्ट्रीयकरण – 1951
- रेल संघ सूची का विषय है
- 2017–18 से सरकार ने रेलवे बजट को आम बजट में शामिल किया गया
- भारत की प्रथम रेल सेवा – 16 अप्रेल 1853 को बोरबंदर (मुम्बई) से थाणे तक
- राजस्थान की प्रथम रेल सेवा – 21 अप्रेल 1874 को आगरा फोर्ट (उत्तरप्रदेश) से बांदीकुई (दौसा) तक
- राजस्थान की प्रथम रेल बस सेवा – मेडता रोड से मेडता सिटी (अक्टूबर 1994)
- रेल वाले बाबा– किशनलाल सोनी (बूँदी में रेल लाये)
- राजस्थान में रेलमार्गो की कुल लम्बाई – 6100 किमी
- देश के कुल रेलमार्ग का – 8.89%

● राजस्थान में 2 रेलवे जोन, 5 मंडल है

(1) उत्तर पश्चिमी रेलवे जोन –
- गठन – 2002
- मुख्यालय – जयपुर
- जयपुर, जोधपुर, अजमेर, बीकानेर मंडल आते है

(2) पश्चिमी मध्य जोन –
- मुख्यालय – जबलपुर
- इसमें कोटा मंडल आता है

● नैरोगेज (छोटी) लाईन – धौलपुर जिले में है

● डूँगरपुर – बाँसवाडा – रतलाम रेल लाईन
- 2011 में सोनिया गाँधी ने इसका शिलान्यास किया
- बाँसवाडा एवं प्रतापगढ जिलों में कोई रेलमार्ग नहीं है

❖ प्रमुख रेलवे संस्थान –

● लोको रेलवे कारखाना (कैरिज वर्कशॉप) – अजमेर
- स्थापना – 1879 में

● सिमको वैगन फैक्ट्री – भरतपुर

● रेलवे विद्युत लोको शैड– कोटा

● मेमू रेल कोच फैक्ट्री– भीलवाडा

● एशिया का मीटरगेज का सबसे बडा रेलवे यार्ड – फुलेरा जंक्शन

● पश्चिम रेलवे क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र – उदयपुर
- स्थापना – 1965 में
- यहाँ भारत का सबसे बडा रेलवे मॉडल कक्ष है

● भारतीय रेल अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र – पचपदरा (बाडमेर)

● भवानी मंडी रेलवे स्टेशन – झालावाड
- यह स्टेशन आधा राज. में व आधा मध्यप्रदेश में है
- मियां का बाडा रेलवे स्टेशन (बालोतरा) का नाम महेश नगर हॉल्ट कर दिया गया है

❖ राजस्थान में वंदे भारत ट्रेन –

- भारत की पहली सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत राज. में अजमेर–जयपुर–दिल्ली मार्ग पर शुरू की गई
- दूसरी वंदे भारत ट्रेन – जोधपुर से साबरमती
- तीसरी वंदे भारत ट्रेन – जयपुर से उदयपुर
- चौथी वंदे भारत ट्रेन – उदयपुर से कोटा से आगरा

● पैलेस ऑन व्हील्स –
- शाही रेलगाडी है जो 26 जनवरी 1982 को प्रारम्भ हुई

17 राजस्थान में पर्यटन

- राज. को सैलानियों का स्वर्ग कहते है
- पर्यटन उद्योग को निर्धूम उद्योग (धुंआ रहित) कहते है
- विश्व पर्यटन दिवस– 27 सितम्बर
- भारतीय पर्यटन दिवस– 25 जनवरी
- अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष– 2017
- राज. में 1956 में पर्यटन विभाग की स्थापना की गई
- 30 जनवरी 2019 से राजस्थान पर्यटन विभाग की टैगलाइन (लोगो) – पधारो म्हारे देश

- राजस्थान में पर्यटन को उद्योग का दर्जा 4 मार्च 1989 को मोहम्मद युनूस समिति की सिफारिश पर दिया गया
- पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य है
- 18 मई 2022 को राज्य सरकार ने टुयूरिज्म (पर्यटन) एवं हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र का विकास करने के लिए इन्हें पूर्ण उद्योग का दर्जा दिया है

- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक नवम्बर में व सबसे कम जून में आते है
- सर्वाधिक विदेशी पर्यटक जयपुर, उदयपुर व जोधपुर में आते है और सर्वाधिक देशी पर्यटक सीकर, जयपुर में आते है

❖ पर्यटन परिपथ (सर्किट) –

- राजस्थान को पर्यटन की दृष्टि से मुख्यत: 10 सर्किटों में विभाजित किया गया है –

(1) मरू सर्किट (डेजर्ट ट्रायंगल) –

- थार रेगिस्तान के जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर व बाडमेर जिले आते है (बाडमेर बाद में शामिल)
- इसे मरू त्रिकोण या रेगिस्तानी त्रिकोण भी कहते है

(2) शेखावाटी सर्किट – चूरू, सीकर, झुंझुनूं जिले

(3) ढूंढाड सर्किट – जयपुर, दौसा जिले

(4) हाडौती सर्किट – कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड

(5) मेरवाडा सर्किट – अजमेर, नागौर

- प्रमुख पर्यटन – ब्रहमा मंदिर, पुष्कर, मेडता, किशनगढ

(6) मेवाड सर्किट – उदयपुर, चितौडगढ, राजसमंद

(7) रणथम्भौर सर्किट – सवाईमाधोपुर, टोंक

(8) मेवात (ब्रज) सर्किट– अलवर, भरतपुर, सवाईमाधोपुर

- प्रमुख पर्यटन स्थल – सिलीसेढ, सरिस्का, भानगढ, भर्तृहरि, पाण्डूपोल, तिजारा

(9) वागड सर्किट – डूँगरपुर, बाँसवाडा

- प्रमुख पर्यटन स्थल – घोटिया अम्बा, मानगढ धाम, सोमनाथ मंदिर, बेणेश्वर, गलियाकोट

(10) गोडवाड सर्किट – जालौर, पाली, सिरोही

- प्रमुख पर्यटन स्थल– माउन्ट आबू, रणकपुर, दिलवाडा

❖ राजस्थान में पर्यटन विकास के नये सर्किट –

● स्वर्णिम त्रिकोण (Golden Triangle) –

- दिल्ली, जयपुर, आगरा
- इसमें सर्वाधिक पर्यटक आते हैं
- स्वर्णिम त्रिकोण पर राजस्थान का शहर – जयपुर स्थित है

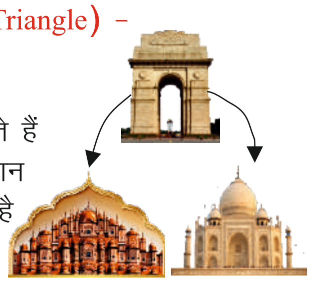

● बृजभूमि रिलीजन सर्किट –

- राजस्थान व उत्तरप्रदेश की सीमा पर पर्यटन को बढावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा विकसित किया जा रहा है

● बुद्धा सर्किट –

- चीन, जापान और श्रीलंका बौद्व देशो के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए राजस्थान के जयपुर व झालावाड जिलो को संवारने का काम होगा

● तीर्थ सर्किट –

- अजमेर, पुष्कर, नाथद्वारा, कांकरोली शामिल है

18 राजस्थान में पशुपालन

- भारत में पहली पशुगणना दिसम्बर 1919 से अप्रेल 1920 के मध्य हुई थी
- आजादी के बाद पहली पशुगणना 1951 में की गई
- राज्य पशुपालन विभाग की स्थापना 1957 में की गई
- 18 वी पशुगणना (2007 में) पहली बार नस्ल के आधार पर पशुगणना हुई थी

- पशुगणना प्रत्येक 5 वर्ष बाद राजस्व मंडल अजमेर द्वारा कराई जाती है
- 2019 में 20 वी पशुगणना हुई

- भारत में सर्वाधिक पशुधन – उत्तरप्रदेश, राजस्थान
- राजस्थान का देश में दूसरा स्थान है
- राजस्थान में कुल पशुधन – 568 लाख है
- 2012 की तुलना में 1.66% की कमी आयी है
- राजस्थान में कुल पशुधन का 10.60% है

- राजस्थान ऊँट, बकरी, गधों में प्रथम स्थान है
- राजस्थान मे सर्वाधिक पशु– बकरियाँ, गाय, भैंस, भेड
- राजस्थान का पशु घनत्व – 166 प्रति वर्ग किमी

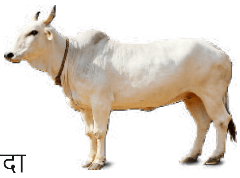

- सर्वाधिक पशु घनत्व डूंगरपुर व न्यूनतम पशु घनत्व जैसलमेर है

- राजस्थान में सर्वाधिक पशु सम्पदा वाले जिले बाडमेर, जोधपुर, जयपुर व न्यूनतम पशु सम्पदा वाले जिले धौलपुर, कोटा, सवाईमाधोपुर है

- ऊन उत्पादन में राज. का प्रथम स्थान (47.98%), दूध उत्पादन में दूसरा स्थान (14.44%) अंडा उत्पादन में 13 वाँ व माँस उत्पादन में 12 वाँ स्थान है

❖ पशुओं की प्रमुख नस्लें –

❖ बकरी –

- उपनाम – गरीब की गाय
- राजस्थान का स्थान – प्रथम
- सर्वाधिक बकरियाँ– बाडमेर
- न्यूनतम बकरियाँ – धौलपुर

- **जखराना –**
  - मूल स्थान – जखराना (बहरोड)
  - बकरी की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है
  - सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है
  - अलवर में सर्वाधिक पायी जाती है इसलिए इसे अलवरी भी कहते है

- **जमनापरी –**
  - सर्वाधिक हाडौती क्षेत्र में
  - मूल स्थान – इटावा (उत्तरप्रदेश)

- **बरबरी –**
  - बकरी की सर्वाधिक सुन्दर नस्ल है
  - पूर्वी जिलों अलवर, भरतपुर, करौली, सवाईमाधोपुर में पायी जाती है

- **सिरोही –**
  - सिरोही, जालौर में मिलती है
  - प्रजनन केन्द्र – रामसर (अजमेर)

- **मारवाडी –**
  - बकरी की प्राचीनतम नस्ल है
  - उत्तर पश्चिमी राजस्थान में सर्वाधिक पायी जाती है

- **शेखावाटी –**
  - काजरी वैज्ञानिको ने विकसित की
  - बिना सींग वाली बकरी
  - चूरू, सीकर, झुंझुनूं में मिलती है

- **लोही –**
  - सीमावर्ती जिले बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर में पायी जाती है
  - सर्वाधिक माँस के लिए प्रसिद्व है

नोट – लोही नस्ल भेड की भी होती है

- **परबतसरी –**
  - हरियाणा की बीटल व सिरोही नस्ल का मिश्रण है
  - नागौर, अजमेर जिलों में मिलती है

- **झरवाडी –** पूर्वी राजस्थान में मिलती है

10 राजस्थान में वन सम्पदा

- राजस्थान में शिकार पर सर्वप्रथम प्रतिबन्ध – टोंक रियासत (1901 में) ने लगाया
- राजस्थान में वन संरक्षण के लिए पहली योजना / पहली बार नियम – जोधपुर रियासत में बनाये गये

- वन अधिनियम बनाने वाली राजस्थान की प्रथम रियासत – अलवर (1935 में)

- राजस्थान वन विभाग की स्थापना – 1950 में (मुख्यालय – जयपुर)
- राष्ट्रीय वन अधिनियम 1951 के तहत राजस्थान में राजस्थान वन अधिनियम 1953 लागू हुआ

- प्रथम राष्ट्रिय वन नीति – 1952 के तहत 33% भू भाग पर वन होने चाहिए

● **वन सरंक्षण अधिनियम – 1980**

- इसके तहत वन भूमि में किसी कार्य के लिए भारत सरकार की अनुमति आवश्यक है
- राज्यों की स्वायत्तता समाप्त हो गई

- राजस्थान की प्रथम वन व पर्यावरण नीति – 18 फरवरी 2010 को जारी की गयी थी
- वन व पर्यावरण नीति जारी करने वाला राजस्थान देश का प्रथम राज्य है

- 5 जून 2023 को राजस्थान वन नीति जारी की गई जिसमें अगले 20 वर्षो में वन आवरण को 20% तक बढाया जाना है

- राजस्थान सरकार ने 2010 मे राजस्थान जैविक विविधता नियमों को बनाया तथा राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड की स्थापना की

- राजस्थान के 32869.69 वर्ग किमी भौगोलिक क्षेत्रफल पर वन है जो कुल क्षेत्रफल का 9.60% भाग पर है

❖ प्रशासनिक दृष्टि से वनों को 3 भागों में बाँटा है

(1) आरक्षित वन (Reserved Forest) - 37.05%

- पूरी तरह से सरकारी नियंत्रण होता है
- लकडी काटने व पशु चराने पर प्रतिबन्ध होता है
- सर्वाधिक – उदयपुर, चितौडगढ, अलवर

(2) रक्षित वन / सुरक्षित वन (Protected Forest) – 56.55%

- लकडी काटने व पशु चराने के लिए अनुमति लेनी होती है
- सर्वाधिक क्षेत्र में विस्तृत है
- सर्वाधिक – बारां, करौली, उदयपुर

(3) अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest) – 6.40%

- लकडी काटने, पशु चराने का प्रतिबन्ध नहीं होता है
- सर्वाधिक – बीकानेर, गंगानगर, जैसलमेर

❖ राजस्थान वन विभाग प्रशासनिक प्रतिवेदन अनुसार –

- राजस्थान में सर्वाधिक वन क्षेत्र वाले जिले – उदयपुर, बारां, करौली, चितौडगढ, अलवर, प्रतापगढ

- सर्वाधिक वन प्रतिशत वाले जिले – प्रतापगढ (37.46%), उदयपुर (35.49%), करौली

- न्यूनतम वन क्षेत्र वाले जिले – चूरू, हनुमानगढ, नागौर

- न्यूनतम वन प्रतिशत वाले जिले – चूरू (0.53%) जोधपुर (1.07%), नागौर

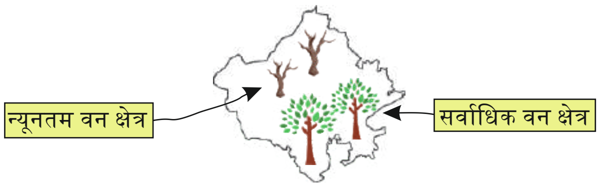

11 राजस्थान में अभयारण्य

- भारत सरकार द्वारा वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 लागू किया गया इसे राजस्थान सरकार ने 1 सितम्बर 1973 को लागू किया

- 42 वें संविधान संशोधन 1976 के द्वारा वन्यजीव विषय को समवर्ती सूची का विषय बनाया है जिसके तहत भारत सरकार व राज्य सरकार दोनों इस पर कानून बना सकती है

❖ चिंकारा –

- वैज्ञानिक नाम – गजेला बनेट्टी
- 22 मई 1981 को राजस्थान का राज्य पशु घोषित किया गया
- राष्ट्रीय मरू उघान व नाहरगढ अभयारण्य में काफी चिंकार देखने को मिलते है

❖ ऊँट –

- वैज्ञानिक नाम – कैमेलस ड्रोमेडेरियस
- 19 सितम्बर 2014 को राज्य पशु घोषित किया गया

❖ गोडावण –

- वैज्ञानिक नाम – क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स
- उपनाम – सोहन चिडिया, ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, माल मोरडी (अजमेर)
- 21 मई 1981 को राजस्थान का राज्यपक्षी घोषित किया गया

● प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड –

- 2013 में गोडावण के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय मरू उघान में इस प्रोजेक्ट को लॉन्च किया गया
- प्रोजेक्ट बस्टर्ड लॉन्च करने वाला राजस्थान देश का पहला राज्य है

- भारत सरकार ने 1 अप्रेल 1973 को बाघ परियोजना की शुरूआत की व बाघ को राष्ट्रीय पशु घोषित किया
- राजस्थान में 5 बाघ परियोजनाएँ चल रही है
- राजस्थान में 3 राष्ट्रीय उद्यान, 27 वन्य जीव अभयारण्य है
- राष्ट्रीय उद्यान केन्द्र सरकार द्वारा संचालित होते है
- भारत का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान जिम कार्बेट नेशनल पार्क (उत्तराखण्ड) है, इसका वर्तमान नाम रामगंगा नेशनल पार्क है

(1) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान – सवाईमाधोपुर

- स्थापना – 1955 में
- 1973 में टाइगर प्रोजेक्ट (प्रथम टाइगर प्रोजेक्ट) शुरू किया
- राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान (1 नवम्बर 1980 को घोषित)

- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बडा राष्ट्रीय उद्यान है
- रणथम्भौर को भारतीय बाघों का घर कहा जाता है
- इस अभयारण्य में लाल सिर वाले तोते व काला गरूड पाया जाता है
- कूनो अभयारण्य (मध्यप्रदेश) को आबाद करने के लिए रणथम्भौर से गुना (मध्यप्रदेश) तक बाघ गलियारा (Tiger Coridor) बनाया जाना प्रस्तावित है

● इण्डिया इको डवलपमेन्ट कार्यक्रम –

- जैव विविधता के संरक्षण के लिए विश्व बैंक की आर्थिक सहायता से यह योजना भारत सरकार द्वारा 1996–97 में 7 स्थानों पर प्रारम्भ की गई जिनमें रणथम्भौर बाघ परियोजना भी एक है

● भैरूपुरा गाँव –

- रणथम्भौर टाइगर रिजर्व की परिधि में स्थित 110 परिवार के गाँव को स्थानांतरित करना है

(5) फीटकाशनी – जोधपुर (6) जम्भेश्वर जी – जोधपुर
(7) डेचूं – फलौदी (8) धोरीमन्ना – बाडमेर
(9) उज्जला – जैसलमेर (10) रामदेवरा – जैसलमेर
(11) देशनोक – बीकानेर (12) जोडबीड – बीकानेर
(13) बज्जू – बीकानेर (14) दियात्रा – बीकानेर
(15) संवत्सर कोटसर– बीकानेर (16) मुकाम – बीकानेर
(17) सैंथल सागर – दौसा (18) महलां – जयपुर
(19) बरदोद – कोटपूतली बहरोड
(20) जोडिया – खैरथल तिजारा (21) रानीपुरा – टोंक
(22) कंवाल जी– सवाईमाधोपुर (23) बागदडा– उदयपुर
(24) कनक सागर – बूंदी (25) सोरसन – बारां
(26) सौखलिया – अजमेर (27) गंगवाना – अजमेर
(28) तिलोरा – अजमेर (29) मेनाल – चितौडगढ
(30) जरोदा – नागौर (31) रोटू – नागौर
(32) सांचौर – जालोर (33) जवाई बाँध – पाली

- राजस्थान का सबसे बडा आखेट निषिद्व क्षेत्र – संवत्सर कोटसर (बीकानेर)
- राजस्थान का सबसे छोटा आखेट निषिद्व क्षेत्र – कनक सागर (बूंदी)

❖ 2016 में राजस्थान के प्रत्येक जिले का अलग वन्यजीव (शुभंकर) घोषित किया है

(1) गंगानगर- चिंकारा

(2) हनुमानगढ-छोटा किलकिल

(3) चूरू - काला हिरण

(4) बीकानेर - भट्ट तीतर

(5) झुंझुनूं - काला तीतर

(6) सीकर - शाहीन

(7) जयपुर - चीतल

(8) अलवर - सांभर

(9) दौसा - खरगोश

(10) भरतपुर - सारस

(11) धौलपुर - पंछीडा

(12) करौली - घडियाल

(13) सवाईमाधोपुर - बाघ

(14) कोटा - ऊदबिलाव

(15) बूंदी - सुर्खाब

(16) बारां - मगरमच्छ

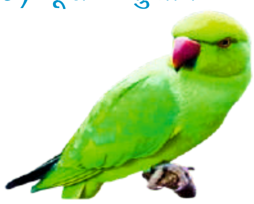
(17) झालावाड-गागरोनी तोता

(18) चितौडगढ- चौसिंगा

(19) प्रतापगढ- उडन गिलहरी

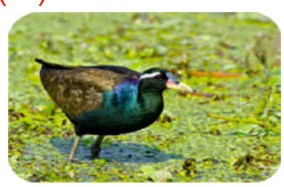
(20) बाँसवाडा- जलपीपी

12 राजस्थान में खनिज

- खनिज सम्पदा में राजस्थान देश के समृद्व (सम्पन्न) राज्यों में आता है
- राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाये जाते है, इनमें से 58 खनिजों का उत्खनन हो रहा है
- खनिजों की किस्मों की दृष्टि से राजस्थान का प्रथम स्थान है जबकि खनिज भण्डारों (उपलब्धता) के आधार पर राज. का झारखंड के बाद दूसरा स्थान है
- खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से राजस्थान का झारखण्ड, मध्यप्रदेश के बाद तीसरा स्थान है
- राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है
- सर्वाधिक खनिज अरावली पर्वतमाला में है
- खान एवं भू विज्ञान विभाग – उदयपुर में है

● RSMML (Rajasthan State Mines and Minerals) – (राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड)

- 1974 में इसकी स्थापना उदयपुर में की गई
- इसका मुख्य कार्य खनिजों का दोहन करना व खनिजों को बढावा देना है
- इसकी गतिविधियों को 4 भागों में बांटा गया है

(1) स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर – रॉक फॉस्फेट (झामरकोटडा, उदयपुर)
(2) स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर – जिप्सम (बीकानेर)
(3) स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर – लाईमस्टोन (जोधपुर)
(4) स्ट्रेटजिक बिजनेस यूनिट एवं प्रोफिट सेन्टर – लिग्नाईट (जयपुर)

● राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम (RSMDC) –

- स्थापना – 1979
- फरवरी 2003 को इसका विलय राजस्थान राज्य खान व खनिज लिमिटेड (RSMML) में कर दिया
- राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्र में स्थिर कीमतों (2011–12) पर सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) मे 5.77% के साथ मजबूत वृद्वि देखी गई है
- 2024–25 में राजस्थान में प्रचलित कीमतों पर सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) मे खनन क्षेत्र का योगदान – 3.30%

❖ खनिजों का वर्गीकरण –

(1) धात्विक खनिज –

- जो धातु से बने हो जिनका उपयोग एक बार से अधिक बार कर सके
- जैसे – लोहा, ताँबा, सोना, चाँदी, मैंगनीज, सीसा जस्ता, टंगस्टन, बेराइट्स, बॉक्साइट
- धात्विक खनिज को दो भागों में बांटा गया है

(क) लौह धात्विक – लौहा, मैंगनीज, टंगस्टन
(ख) अलौह धात्विक – ताँबा, सीसा जस्ता, सोना, चाँदी, बेराइट्स

(2) अधात्विक खनिज –

- धातु से बने नहीं होते व मुख्यतः औद्योगिक क्रियाओं में काम लेते है इसलिए औद्योगिक खनिज भी कहते है
- जैसे – अभ्रक, ऐस्बेस्टॉस, फैल्सपार, वोलेस्टोनाइट, सल्फर, चूना पत्थर, संगमरमर

(3) आण्विक खनिज – यूरेनियम, लिथियम, बेरिलियम, ग्रेफाइट

(4) उर्वरक खनिज – जिप्सम, रॉक फास्फेट, पोटाश, पाइराइट्स

(5) ईंधन खनिज – कोयला, पेट्रोलियम, प्राकतिक गैस

> सीसा जस्ता, सेलेनाईट, वुलेस्टोनाईट, जास्पर, तामडा (गारनेट) मे राजस्थान का एकाधिकार (एकमात्र उत्पादक राज्य) है

13 राजस्थान के उद्योग

❖ उद्योगो का वर्गीकरण –

- **खनिज आधारित उद्योग** – सीमेन्ट उद्योग, सीसा जस्ता उद्योग, संगमरमर उद्योग, लोहा, ताँबा, काँच, प्लास्टर ऑफ पेरिस, जिप्सम आधारित उद्योग
- **कृषि आधारित उद्योग** – सूती वस्त्र उद्योग, चीनी, खाद्य तेल, खाण्डसारी उद्योग, भुजिया पापड, तम्बाकू उद्योग
- **वन आधारित उद्योग** – कागज उद्योग, माचिस उद्योग, लाख, रबर उद्योग
- **लघु व कुटीर उद्योग** – आटा, तेल घानी, गुड, खादी, हथकरघा, रंगाई–छपाई, बंधेज, चमडा, हाथ कागज उद्योग

✎ सर्वाधिक विकास की संभावनाएँ – खनिज आधारित उद्योगों में है

❖ सूती वस्त्र उद्योग –

✎ राजस्थान का सबसे प्राचीन और संगठित उद्योग है
✎ भारत में सर्वाधिक सूती वस्त्र मिल – महाराष्ट्र, गुजरात
✎ भारत का मैनचेस्टर – अहमदाबाद
✎ राजस्थान का मैनचेस्टर (वस्त्र नगरी) / टेक्सटाइल सिटी – भीलवाडा
✎ राज. का नवीन मैनचेस्टर–भिवाडी (खैरथल–तिजारा)
✎ राजस्थान में सूती वस्त्र उद्योग के लिए कच्चा माल (कपास) – हनुमानगढ, गंगानगर से प्राप्त होता है

- **राजस्थान में सूती वस्त्र मिल** –

- **दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड**– ब्यावर

✎ राज. की प्रथम सूती वस्त्र मिल है
✎ निजी क्षेत्र की मिल है
✎ स्थापना – दामोदर दास राठी ने 1889 में

- **एडवर्ड मिल्स** – ब्यावर (1906)
- **महाराजा उम्मेदसिंह मिल्स** – पाली

✎ 1939 को सार्वजनिक कंपनी बन गई
✎ राजस्थान की सबसे बडी सूती वस्त्र मील है

- **महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड** – ब्यावर – 1925
- **विजयनगर कॉटन मिल्स**– विजयनगर (ब्यावर)– 1932
- **मेवाड टैक्सटाईल मिल्स** – भीलवाडा – 1938
- **सार्दुल टैक्सटाईल लिमिटेड** – गंगानगर – 1946
- **आदित्य मिल्स लिमिटेड** – किशनगढ (अजमेर)
- **राजस्थान स्पिनिंग एंड विविंग मिल्स (मयूर सूटिंग)** – गुलाबपुरा (भीलवाडा)
- **माण्क्यिलाल वर्मा टेक्सटाईल इंस्टीट्यूट** – भीलवाडा
- **राजस्थान टैक्सटाईल मिल्स**– भवानी मण्डी (झालावाड)
- **गोपाल इंडस्ट्रीज मिल्स** – कोटा
- **राजस्थान कोऑपरेटिव मिल्स** – गुलाबपुरा (भीलवाडा)

✎ वस्त्र उद्योग को बढावा देने के लिए सर्वप्रथम कम्प्यूटर एडेड डिजायन सेन्टर भीलवाडा में स्थापित किया गया

- **कम्प्यूटर एडेड कारपेट डिजायन सेन्टर** – जयपुर

❖ चीनी उद्योग –

✎ कृषि आधारित दूसरा बडा उद्योग है
✎ चीनी उद्योग मौसमी उद्योग है
✎ कच्चा माल – गन्ना, चुकन्दर, ईधन, चूना पत्थर, सल्फर

- **द मेवाड शुगर मिल्स लिमिटेड** – भोपाल सागर (चितौडगढ)

✎ 1932 में निजी क्षेत्र में मेवाड इंडस्ट्रीज नाम से स्थापित की गई व 1940 मे मेवाड शुगर मिल्स लिमिटेड नाम से प्रारम्भ हुई
✎ राजस्थान की प्रथम शुगर मिल है

- **राजस्थान स्टेट गंगानगर शुगर मिल (RSGSM)** – गंगानगर

✎ 1945 में बीकानेर इंडस्ट्रियल कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीकानेर औद्योगिक निगम लिमिटेड) के नाम से निजी क्षेत्र में स्थापित की गयी